डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

पाठ्य सामग्री,

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 21.07.2020

व्याख्यान संख्या-18 (कुल सं. 54)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

सघन कुञ्ज घन घनतिमिर, अधिक अँधेरी राति।

तऊ न दुरिहै श्याम वह, दीपसिखा-सी जाति।।

प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्वर्ण-मंजूषा' से उद्धृत है। इसके रचयिता रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवि बिहारी हैं, जिनकी रचना 'बिहारी सतसई' हिन्दी साहित्य में लोकप्रियता के क्षेत्र में रामचरितमानस के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तक मानी जाती है।

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

प्रस्तुत दोहे का प्रसंग यह है कि नायक नायिका की सखी से प्रार्थना करता है कि आज उपयुक्त अवसर है, इसलिए तुम नायिका को अभिसार के लिए कुंज में ले चलो। सखी नायक की रुचि बढ़ाने के लिए नायिका के रूप की प्रशंसा करती हुई नायक की बात का खंडन करती है; परंतु उसका अभिप्राय यही है कि नायक और अधिक लालायित होकर अनुनय-विनय करे तब ले जाऊँ।

सखी नायक से कह रही है कि हालाँकि कुंज सघन है, बादलों का अंधकार भी घना है और इसलिए रात भी बादलों के कारण और अधिक अँधेरी है; फिर भी, हे श्याम, दीपशिखा के समान यह नायिका जाती हुई छिपेगी नहीं।

सखी के कहने का भाव यह है कि जिस प्रकार घने अंधकार में भी दिया नहीं छिपता, उसी प्रकार अत्यधिक रूपवती यह नायिका भी छिप नहीं सकेगी। ऐसा कहकर वह नायिका के प्रति नायक का अनुराग और अधिक बढ़ाना चाहती है।

प्रस्तुत दोहे में धर्मलुप्तोपमा से परिपुष्ट विशेषोक्ति अलंकार है।

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

***सप्रसंग व्याख्या (2)**

कहत सबै कवि कमल से, मो मत नैन पखानु।
नतरुक इन बिय लगत कत, उपजतु बिरह-कृसानु।।

प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्वर्ण-मंजूषा' से उद्धृत है। इसके रचयिता रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवि बिहारी हैं, जिनकी रचना 'बिहारी सतसई' हिन्दी साहित्य में लोकप्रियता के क्षेत्र में रामचरितमानस के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तक मानी जाती है।

प्रस्तुत दोहे का प्रसंग नायिका के विरह का है। विरह से व्याकुल नायिका सखी से कह रही है कि नयन वास्तव में कमल के समान नहीं, बल्कि पत्थर के समान है; क्योंकि दो व्यक्ति की आँखें मिलने से विरह की आग जल जाती है।

उपरोक्त भाव से नायिका कह रही है कि सभी कवि इनको अर्थात् नयन को कमल के समान कहते हैं, परंतु मेरे मत से नयन पत्थर समान हैं, नहीं तो इनमें दूसरे नयनों के लगने से अर्थात् दो व्यक्तियों के नेत्र परस्पर टकराने से विरह रूपी आग क्यों पैदा होती।

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

ध्यातव्य है कि व्याकुलता में अच्छे उपमान भी बुरे लगने लगते हैं। नायिका अभी विरह से अत्यधिक व्याकुल है। उससे सहा नहीं जा रहा और इसका कारण वह यही मानती है कि नायक से आँखें मिलीं इसीलिए तो विरह की आग सहनी पड़ रही है। इसलिए वह नयन को पत्थर के समान कहती है, क्योंकि उनके आपस में मिलने से विरह की आग झेलनी पड़ती है।

प्रस्तुत दोहे में हेत्वपह्नुति अलंकार है।